2

परिभाषा

■ कथक :

लय–समय की एक-सी चाल अथवा गति को लय कहते हैं । गायन, वादन एवं नृत्य की रफ्तार अथवा दो क्रियाओं के बीच के समान अन्तराल को लय कहते हैं । लय संगीत की आधारशिला है । इसके बिना संगीत का कोई अस्तित्व ही नहीं है ।

लय के प्रकार–शास्त्रों में लय के तीन भेद माने गए हैं । (1) विलम्बित लय (2) मध्य लय (3) द्रुत लय ।

विलम्बित लय–साधारण से धीमी गति को विलम्बित लय कहते हैं । संगीत की भाषा में इसे ठाह लय कहते हैं । कथक नृत्य में इस लय में आमद, सलामी इत्यादि नाचे जाते हैं ।

मध्य लय–लय न अधिक धीमी हो और न ही अधिक तेज हो तो उस लय को मध्य लय कहते हैं । इस लय में कथक नृत्य में तोड़े, टुकड़े परण इत्यादि नाचे जाते हैं।

द्रुत लय–मध्य लय से दुगनी तेज लय को द्रुत लय कहते हैं । इसकी रफ्तार तेज होती है । नृत्य में इस लय में पैरों की तैयारी ततकार, फरमाइशी टुकड़े इत्यादि नाचे जाते हैं ।

परण–नृत्य का ऐसा बोल जिसमें तबले या पखावज के जोरदार बोलों का समावेश होता है, परण कहलाता है । यह एक से अधिक आवृत्ति के बोल समूह का होता है।

मात्रा–संगीत में समय नापने के पैमाने या इकाई को मात्रा कहते हैं । मात्राओं के मेल से ताल का निर्माण होता है ।

आवर्त्तन–जब कोई ताल या बोल अपनी पहली मात्रा से प्रारम्भ होकर पूरी बजकर या नाचकर फिर से पहली मात्रा या सम पर आए तो उसे उस ताल या बोल की एक आवृत्ति या आवर्तन कहते हैं । दूसरे शब्दों में, किसी ताल की पूरी मात्रा या उसके बोल को एक आवृत्ति कहते हैं ।

मुद्रा–भावों को प्रकट करने के लिए शरीर के अंगों की विशिष्ट स्थिति, जो भावपरक हो, मुद्रा कहलाती है । इसे नृत्य की भाषा कहते हैं । नृत्य में हस्त-मुद्राओं का बड़ा ही महत्त्व है । हाथों के संकेत से नृत्यकार भावों की अभिव्यक्ति करता है । हाथ-संचालन की दृष्टि से मुद्रा दो प्रकार की होती है–(1) संयुक्त

मुद्रा (2) असंयुक्त मुद्रा । दोनों हाथों के संयोग से जो मुद्रा बनती है उसे संयुक्त मुद्रा कहते हैं जैसे–शंख, कपोत, इत्यादि । एक हाथ से जो मुद्रा या स्थिति बनती है उसे असंयुक्त मुद्रा कहते हैं । जैसे –पताका, त्रिपताका, अर्धचन्द्र, सूचीमुख इत्यादि ।

हस्तक–हाथों द्वारा बनाई गई स्थिति या मुद्रा को हस्तक कहते हैं । इसे हस्तमुद्रा भी कहा जाता है । कथक नृत्य में थाट की स्थिति में हस्तक का विशेष महत्त्व है ।

तांडव–रौद्र रस प्रधान नृत्य तांडव कहलाता है । अर्थात् जिस नृत्य में वीर एवं रौद्र रस का प्रदर्शन होता है वह तांडव नृत्य कहलाता है । एक पौराणिक कथा के अनुसार त्रिपुरासुर राक्षस का वध करने के लिए भगवान शंकर ने वीर और रौद्र रस प्रधान जो नृत्य किया उसे तांडव नृत्य कहते हैं । इस नृत्य के प्रवर्त्तक भगवान शंकर को माना गया है । यह नृत्य पुरुषों के लिए अधिक उपयुक्त होता है । अंगों की चपलता, वीर, क्रोध तथा रौद्र भावों को प्रदर्शित करने के लिए यह बहुत उपयुक्त नृत्य शैली है । तांडव नृत्य में विश्व की पाँच प्रक्रियाएँ–सृष्टि, स्थिति, तिरोभाव, आविर्भाव और संहार दिखाई जाती है । तांडव के मुख्य सात भेद हैं –

(1) संहार तांडव (2) त्रिपुर तांडव

(3) कालिका तांडव (4) संध्या तांडव

(5) गौरी तांडव (6) उमा तांडव

(7) आनन्द तांडव ।

लास्य– भावों की अभिव्यक्ति के लिए शृंगार रस प्रधान नृत्य लास्य नृत्य कहलाता है । एक कथा के अनुसार त्रिपुरासुर राक्षस का वध करने के पश्चात् उसके हर्ष में पार्वती ने जो शृंगार रस प्रधान नृत्य किया उसे लास्य नृत्य कहते हैं । स्त्री कोमलता और शृंगार की प्रतीक मानी जाती है । अत: लास्य नृत्य शृंगारिक और कोमलता प्रधान नृत्य है । वैसे तो पुरुष और स्त्री दोनों ही इस नृत्य को कर सकते हैं परन्तु यह स्त्रियों के लिए अधिक उपयुक्त है क्योंकि इसमें ऐसे अंगहारों का प्रदर्शन होता है जो स्त्रियों के लिए अधिक उपयुक्त है ।

इसके तीन प्रकार हैं –(1) विकट लास्य (2) विषम लास्य (3) लघु लास्य ।

प्रश्न

1. लय की परिभाषा लिखें ।
2. शास्त्रों में लय के कितने प्रकार माने गए हैं ?
3. मुद्रा की व्याख्या करते हुए इसके भेदों को लिखें ।
4. 'तांडव' एवं 'लास्य' का तुलनात्मक वर्णन करें ।
5. कथक में किस प्रकार के बोलों को 'परण' कहते हैं ?

भरतनाट्यम

अलारिपु– इस शब्द का अर्थ विकसित या प्रस्फुटित होना है । भरतनाट्यम का यह पहला आइटम होता है । पैरोंको सटाकर समपाद की मुद्रा में नमस्कार करने के पश्चात् ही नृत्य प्रारंभ होता है । इस प्रारम्भिक कार्यक्रम में ग्रीवा, नेत्र और भौं के विभिन्न रूपों से परिचालन होता है जिसे रेचक कहते हैं । नर्तकी गति का संकेत करती है । अलारिपु की विशेषता यह है कि इसमें शरीर के दोनों भागों का संचालन एक समान होता है । अर्थात जैसा, दाहिना अंग करता है ठीक वैसी ही स्थितियाँ बायें अंग से प्रस्तुत की जाती है ।

जतिस्वरम– अलारिपु के पश्चात् जतिस्वरम् प्रस्तुत किया जाता है । इसमें ताल के विभिन्न करतब दिखाए जाते हैं । नर्तकी कमर पर हाथ रखकर पैरों के सीधे परिचालन से ताल दिखाती है । उसके बाद वह जाति का काम उठाती है । मृदंगमवादक व नर्तकी क्रमशः सोल्लुकुट्टू और चोल्लु का काम दिखाते हैं । मृदंग से बजने वाले बोल चोल्लु कहलाते हैं तथा पद संचालन से निकलने वाली घुंघरू की ध्वनि सोललकुट्टू कही जाती है ।

ध्वनि–जो कुछ हम सुनते हैं उसे ध्वनि कहते हैं । टक्कर से भी जो आवाज आती है या उत्पन्न होती है वह ध्वनि ही कहलाती है । कुछ ध्वनियाँ कर्णप्रिय होती है तथा कुछ कर्णकटु होती हैं । संगीत के मधुर ध्वनि को नाद कहते हैं ।

कम्पन–सुरपेटी और वीणा के खिंचे हुए तार को स्पर्श करने अथवा छेड़ने से तार के ऊपर–नीचे जाने को कम्पन कहते हैं । इससे ध्वनि उत्पन्न होती है । तार को आघात करने पर तार पहले ऊपर जाकर अपने स्थान पर आता है और फिर नीचे जाकर अपने स्थान पर आता है । इस प्रकार एक कम्पन पूरा होता है । जब तक तार पर छेड़ने का प्रभाव रहता है तब तक तार कम्पित होता रहता है और ध्वनि उत्पन्न होती रहती है । जैसे–जैसे तार पर छेड़ने का प्रभाव कम होता है, ध्वनि कम होती जाती है । एक सेकेण्ड में तार कितनी बार कम्पित होता है उसकी कम्पन संख्या उतनी ही मानी जाती है । वैज्ञानिकों ने कम्पन संख्या को नापने का प्रयत्न किया है और वे इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि जैसे–जैसे हम स्वर से ऊपर बढ़ते जाते हैं स्वरों की कम्पन संख्या प्रति सेकेन्ड बढ़ती जाती हैं और जैसे–जैसे सा से नीचे की ओर चलते हैं स्वरों की कम्पन संख्या कम होती जाती है । कम्पन के मुख्य दो प्रकार हैं

(1) नियमित और अनियमित कम्पन

(2) स्थिर और अस्थिर कम्पन

प्रश्न

1. भरतनाट्यम का प्रथम कार्यक्रम को क्या कहते है, इसका वर्णन करें ।
2. जातिस्वरम् से क्या समझते हैं ? सोल्लुकट्टु तथा चोल्लु शब्द से क्या समझती हैं ?
3. ध्वनि एवं कम्पन से क्या समझती है ? ध्वनि एवं कम्पन का तुलनात्मक विवेचना करें ।
4. कम्पन के कितने प्रकार है, नाम लिखें ।

पद्मश्री हरि उप्पल के विषय में बिहार के कला से जुड़े प्रत्येक बच्चों को जानना आवश्यक है। हरि उप्पल जी को बचपन से ही नृत्य सीखने की प्रबल इच्छा थी। इन्होंने अपने युवावस्था में मणिपुर जाकर मणिपुरी नृत्य की शिक्षा ली फिर ये कला मंडलम जाकर कथाकली नृत्य की विधिवत शिक्षा ली। तत्पश्चात बिहार की लड़कियों के लिए इन्होंने 50 के दशक में भारतीय नृत्य कला मन्दिर की स्थापना की जहाँ पर सभी शास्त्रीय नृत्यों की विधिवत शिक्षा दी जाती है। 2011 जनवरी में पद्मश्री हरि उप्पल जी का देहावसान हुआ।

विश्व नृत्य दिवस - 29 अप्रैल को पूरे विश्व में मनाया जाता है।

विश्व संगीत दिवस - 21 जून को पूरे विश्व में मनाया जाता है।

ओडिसी (पारिभाषिक शब्द)

ताल–त्रिपट् एवं खेमटा।

भाव–मुद्रा एवं अभिनय।

ताल–ताल एक ऐसा शब्द है जिसके बिना सृष्टि भी नहीं चल सकती है। बेताल होने पर ही पृथ्वी पर भी भूचाल आता है। सड़क पर भी दुर्घटनाएँ बेताल होते ही होती है।

यहाँ पर ओडिसी नृत्य की चर्चा हो रही है। इस नृत्य में दक्षिण भारतीय तालपद्धति का पालन होता है। इस नृत्य में विभिन्न प्रकारों के ताल का प्रयोग होता है, इसके लिए एक श्लोक है–

ध्रुवमठ रूपकस्य झम्पा त्रिपटएवच।

अटताल एकतालस्य सप्तताल प्रकृतित:॥

1.	ध्रुवताल	–	मात्रा	14
2	मठताल	–	,,	10
3.	रूपक	–	,,	6
4.	झम्पा	–	,,	5
5.	अटताल	–	,,	12
6.	एकताल	–	,,	4
7.	त्रिपट	–	,,	7

इस पाठ में दो तालों का वर्णन किया गया है, त्रिपट एवं खेमटा। त्रिपट ताल को हिन्दुस्तानी संगीत में रूपक भी कहते हैं।

ताल		त्रिपट
मात्रा	–	7
जाति	–	त्रिस्र
भाग	–	3
अंग	–	। लघु । द्रुत । द्रुत
चिह्न	–	1 0 0
छंद	–	3 + 2 + 2 = 7
ताली	–	1 पर 4 पर 6 पर

उकुट (बोल) एक गुण– 1 2 3 4 5 6 7

थेई तथि दांक ताथि दांक | ताथि दाक

ताल-खेमटा– खेमटा ओडिसी नृत्य में बहुत प्रमुख ताल है। इसे झूला ताल भी कहते हैं। यह 6 मात्रा का होता है।

ताल खेमटा–	मात्रा	–	6
	जाति	–	तिस्र
	भाग	–	2
	ओ	–	2
	चिह्न	–	| |
	छंद	–	3 + 3 = 6
	ताली	–	1 पर 4 पर

उकुट (बोल)– धा आ तिन | ताक धा तिन

अभिनय

ओडिसी नृत्य में अभिनय का महत्त्व बहुत अधिक है। ओडिसी नृत्य भावना और अभिनय प्रधान नृत्य है।

(ओडिसी नृत्य में भाव पूर्ण मुद्रा में एक नर्तकी)

मन की भावना को मुख और हस्त द्वारा दर्शको के समक्ष अभिव्यक्त करना ही अभिनय कहलाता है –

अभिनय चार प्रकार के हैं –

(1) आंगिक (2) वाचिक (3) आहार्य (4) सात्विक

आंगिक–अंग, प्रत्यंग तथा उपांग द्वारा जिस अभिनय की अभिव्यक्ति होती है या की जाती है उसे आंगिक कहते हैं, जैसे–अंग, सिर, कर, वक्ष, पाश्व, कटिप्रदेश, पद तथा ग्रीवा ।

वाचिक–जो अभिनय वचन द्वारा किया जाता है । जैसे काव्य, नाटक, कथा आदि को वचन द्वारा प्रकाशित करने को वाचिक अभिनय कहते हैं ।

आहार्य–वस्त्र, अलंकार, और साज-सज्जा को आहार्य कहते हैं । विभिन्न रंगों के वस्त्र, परिधान एवं सुदंर गहनों के द्वारा विभूषित होकर जब कोई नर्त्तकी अभिनय करती है तो उसे आहार्य कहते हैं ।

सात्विक–अपने मन की भावना को भाव रस द्वारा अभिव्यक्त करने को सात्विक अभिनय कहा जाता है । यह मनोवृत्ति द्वारा स्वत: निर्गत होता है । सात्विक अभिनय के निम्नलिखित 8 गुण हैं–स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, वैपश्य, वैवर्ण, अश्रु एवं प्रलय ।

भाव

भाव शब्द का बहुत ही वृहद अर्थ है परन्तु यहाँ पर हम शास्त्रीय नृत्य के अन्तर्गत भाव के विषय में चर्चा करेंगे। जिस प्रकार हिन्दी और अंग्रेजी या भाषा के व्याकरण में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होता ठीक उसी प्रकार भाव हो या अभिनय ये सभी शास्त्रीय नृत्य में लगभग सामान्य ही होते हैं–

मनुष्य के हृदयगत चिंता या विचारों को जब हम चेहरे तथा अंगों के द्वारा प्रदर्शित करते हैं तो उसे भाव कहते हैं–ये 5 (पाँच) प्रकार के होते हैं–

(1) स्थायी भाव (2) विभाव

(3) अनुभाव (4) संचारी भाव

(5) व्याभिचारी

(1) **स्थाई भाव**–के कारण जिस आनंद की प्राप्ति होती है उसे स्वाद या रस कहा जाता है– यह 9 प्रकार के होते हैं –

(1) रति (2) हास (3) शोक (4) क्रोध (5) भय (6) विभत्स (7) विस्मय (8) उत्साह (9) शांत

विभाव–विभाव नृत्य नाट्य और काव्य की रचना में सहायता करते हैं । ये भी रस सृष्टि के कारण

है। इसके दो भाग हैं—

(1) आलम्बन (2) उद्दीपन ।

(3) **अनुभाव**—स्थाई भाव या संचारी भाव को प्रत्यंग द्वारा व्यक्त करना ही अनुभाव कहलाता है । जैसे–हाथ ऊपर उठाना, तिरछी नजर से देखना ।

(4) **संचारी भाव**—स्थायी भाव के साथ अन्य मनोविकार जैसे छोटे–छोटे भाव जो उत्पन्न होते हैं एवं पुनः विलीन हो जाते हैं संचारी भाव कहलाते हैं। यदि हम स्थाई भाव की तुलना समुद्र से करेंगे तो संचारी भाव की तुलना समुद्र के लहर से की जा सकती है ।

(5) **व्याभिचारी**—स्थायी भाव प्रकार के छोटे–छोटे भाव जो समान्य नहीं होते तो फिर अपवाद ही होते हैं, व्याभिचारी कहलाते हैं। इस प्रकार हमने भाव की परिभाषा पढ़ी ।

हस्त मुद्रा

अभिनय दर्पण के अनुसार हस्त मुद्रा तीन प्रकार के होते हैं–

(1) असंयुक्त हस्त मुद्रा – 28 प्रकार

(2) संयुक्त हस्त मुद्रा – 23 प्रकार

(3) नृत्य हस्त मुद्रा – 13 प्रकार

प्रतिदिन के जीवन में हम जितना भी कार्य करते हैं उसमें हाथ का प्रयोग तो अवश्य ही होता है परन्तु वह सभी एक मुद्रा होती है जिसका नाम भी है यह जान कर आपको आश्चर्य होगा। किन्तु शास्त्रीय नृत्य में हम एक हाथ से या दोनों हाथों से जो भी कार्य करते हैं उसका एक नाम है जिसे सचित्र दिया जा रहा है–

असंयुक्त हस्तमुद्रा प्रकार 28

(1) पताका	(2) त्रिपताका	(3) अर्धपताका
(4) कर्त्तरीमुख	(5) मयूर	(6) अर्धचन्द्र
(7) अराल	(8) शुकतुण्ड	(9) मुष्टी
(10) शिखर	(11) कपित्थ	(12) कटकामुख
(13) सूची	(14) चन्द्रकला	(15) पद्मकोश
(16) सर्पशीर्ष	(17) मृगशीर्ष	(18) सिंहमुख
(19) कांगुल	(20) अलपद्म	(21) चतुर

(22) भ्रमर (23) हस्सास्य (24) हंसपक्ष

(25) संदंश (26) मुकुल (27) ताम्रचूड़

(28) त्रिशूल

प्रश्न

1. ताल श्लोक स्मरण करके लिखें।

2. विभिन्न तालों की मात्रा के विषय में लिखें।

3. ताल त्रिपट और खेमटा का पूर्ण वर्णन करें।

4. अभिनय किसे कहते हैं तथा इसके प्रकार लिखें।

5. भाव की परिभाषा एवं प्रकार लिखें।

6. संयुक्त हस्त मुद्रा तथा असंयुक्त हस्त मुद्रा कण्ठस्थ करें तथा लिखें।

❑

मणिपुरी नृत्य (पारिभाषित शब्द)

लास्य–नृत्य का वह रूप जिसमें ललित अंगहार ललित लय, कौशिकी वृत्ति तथा गति का प्रयोग होता है, लास्य कहलाता है। ताल, वाद्य, नृत्य तथा अभिनय के क्रम में किया जानेवाला कोमल प्रयोग लास्य कहलाता है। लास्य कोमलता और शृंगारिकता का प्रतीक है। इसमें ऐसे अंगहारों का प्रयोग किया जाता है जो स्त्रियों के लिए अधिक उपयुक्त होता है। लास्य से रस और भाव की उत्पत्ति होती है। लास्य शृंगार रस से परिपूर्ण लज्जा एवं विनम्रता का परिचायक होता है। इस नृत्य में पदगति या पदसंचालन अत्यंत कोमल रूप से होता है।

हस्त–हाथों के संकेत से जो मुद्रा बनती है या उसके द्वारा भाव का प्रदर्शन किया जाता है उसे हस्त या हस्तक कहते हैं। नृत्य में भावों को प्रदर्शित करने के लिए कभी एक हाथ तथा कभी दोनों हाथों का प्रयोग किया जाता है। एक हाथ से जो मुद्राएँ बनती हैं उसे एक हस्तमुद्रा तथा दोनों हाथों से जो मुद्राएँ बनती हैं उसे संयुक्त हस्त मुद्रा कहते हैं। अभिनय दर्पण के अनुसार असंयुक्त या एक हस्त मुद्रा 28 प्रकार के हैं तथा संयुक्त हस्त मुद्रा 23 प्रकार के होते हैं, किन्तु मणिपुरी नृत्य में केवल गोविन्द संगति लीला केवल 8 प्रकार के ही असंयुक्त मुद्रा तथा 4 प्रकार के संयुक्त हस्तमुद्रा को प्रयोग में लाया जाता असंयुक्त हस्त है। उनके नाम इस प्रकार है–(1) पताक हस्त, (2) त्रिपताक हस्त, (3) अर्ध पताक हस्त, (4) कपित्थ हस्त, (5) मुष्ठीहस्त, (6) अर्धचन्द्र हस्त, (7) मृगशिर हस्त, (8) हस्यास्य हस्त।

संयुक्त हस्तमुद्रा–(1) अंजलि हस्त, (2) कर्कटम् हस्त, (3) चक्रहस्त, (4) सम्पुट हस्त।

मन की भावना को मुख और हस्त द्वारा दर्शकों के समक्ष अभिव्यक्त करना ही अभिनय कहलाता है –

अभिनय चार प्रकार के हैं–

(1) आंगिक (2) वाचिक (3) आहार्य (4) सात्विक

आंगिक–अंग, प्रत्यंग तथा उपांग द्वारा जिस अभिनय की अभिव्यक्ति होती है या की जाती है उसे आंगिक कहते हैं, जैसे–अंग, सिर, कर, वक्ष, पाश्व, कटिप्रदेश, पद तथा ग्रीवा ।

वाचिक–जो अभिनय वचन द्वारा किया जाता है । जैसे काव्य, नाटक, कथा आदि को वचन द्वारा प्रकाशित करने को वाचिक अभिनय कहते हैं ।

आहार्य–वस्त्र, अलंकार, और साज-सज्जा को आहार्य कहते है । विभिन्न रंगों के वस्त्र, परिधान एवं सुदंर गहनों के द्वारा विभूषित होकर जब कोई नर्त्तकी अभिनय करती है तो उसे आहार्य कहते हैं ।

सात्विक–अपने मन की भावना को भाव रस द्वारा अभिव्यक्त करने को सात्विक अभिनय कहा जाता है । यह मनोवृत्ति द्वारा स्वत: निर्गत होता है । सात्विक अभिनय के निम्नलिखित 8 गुण हैं–स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, वैपश्य, वैवर्ण, अश्रु एवं प्रलय ।

भाव

भाव शब्द का बहुत ही वृहद अर्थ है परन्तु यहाँ पर हम शास्त्रीय नृत्य के अन्तर्गत भाव के विषय में चर्चा करेंगे। जिस प्रकार हिन्दी और अंग्रेजी या भाषा में व्याकरण में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होता ठीक उसी प्रकार भाव हो या अभिनय ये सभी शास्त्रीय नृत्य में लगभग सामान्य ही होते हैं–

मनुष्य के हृदयगत चिंता या विचारों को जब हम चेहरे तथा अंगों के द्वारा प्रदर्शित करते हैं तो उसे भाव कहते हैं–ये 5 (पाँच) प्रकार के होते हैं–

(1) स्थायी भाव (2) विभाव

(3) अनुभाव (4) संचारी भाव

(5) व्याभिचारी

(1) **स्थायी भाव**–के कारण जिस आनंद की प्राप्ति होती है उसे स्वाद या रस कहा जाता है–यह 9 प्रकार के होते हैं –

(1) रति (2) हास (3) शोक (4) क्रोध (5) भय (6) विभत्स (7) विस्मय (8) उत्साह (9) शांत

विभाव–विभाव नृत्य नाट्य और काव्य की रचना में सहायता करते हैं । ये भी रस सृष्टि के कारण है । इसके दो भाग हैं –

(1) आलम्बन (2) उद्दीपन ।

(3) **अनुभाव**–स्थायी भाव या संचारी भाव को प्रत्यंग द्वारा व्यक्त करना ही अनुभाव कहलाता है ।

जैसे–हाथ ऊपर उठाना, तिरछी नजर से देखना ।

(4) **संचारी भाव**–स्थायी भाव के साथ अन्य मनोविकार जैसे छोटे–छोटे भाव जो उत्पन्न होते हैं एवं पुनः विलीन हो जाते हैं संचारी भाव कहलाते हैं। यदि हम स्थाई भाव की तुलना समुद्र से करेंगे तो संचारी भाव की तुलना समुद्र के लहर से की जा सकती है ।

(5) व्याभिचारी–स्थाई भाव प्रकार के छोटे–छोटे भाव जो सामान्य नहीं होते तो फिर अपवाद ही होते हैं व्याभिचारी कहलाते हैं। इस प्रकार हमने भाव की परिभाषा पढ़ी ।

हस्त मुद्रा

अभिनय दर्पण के अनुसार हस्त मुद्रा तीन प्रकार के होते हैं–

(1) असंयुक्त हस्त मुद्रा –28 प्रकार

(2) संयुक्त हस्त मुद्रा –23 प्रकार

(3) नृत्य हस्त मुद्रा –13 प्रकार

प्रतिदिन के जीवन में हम जितना भी कार्य करते हैं उसमें हाथ का प्रयोग तो अवश्य ही होता है परन्तु वह सभी एक मुद्रा होती है जिसका नाम भी है यह जान कर आपको आश्चर्य होगा। किन्तु शास्त्रीय नृत्य में हम एक हाथ से या दोनों हाथों से जो भी कार्य करते हैं उसका एक नाम हैं जिसे सचित्र दिया जा रहा है–

असंयुक्त हस्तमुद्रा के 28 प्रकार के होते हैं–

(1) पताका	(2) त्रिपताका	(3) अर्धपताका
(4) कर्त्तरीमुख	(5) मयूर	(6) अर्धचन्द्र
(7) अराल	(8) शुकतुण्ड	(9) मुष्टी
(10) शिखर	(11) कपित्थ	(12) कटकामुख
(13) सूची	(14) चन्द्रकला	(15) पद्मकोश
(16) सर्पशीर्ष	(17) मृगशीर्ष	(18) सिंहमुख
(19) कांगुल	(20) अलपद्म	(21) चतुर
(22) भ्रमर	(23) हस्सास्य	(24) हंसपक्ष
(25) संदश	(26) मुकुल	(27) ताम्रचूड़
(28) त्रिशूल		

प्रश्न

1. मुद्रा के प्रकारों का सविस्तार वर्णन करें।

2. मणिपुरी नृत्य में कितने प्रकार के 'हस्त' मुद्राओं का प्रयोग होता है।

3. 'लास्य' शब्द की व्याख्या करें।